

शाकसिंहवचन २

उंयुक्रियायुमाराः श्रोत्राण्युर्तामास्याधवदुदाशो - मक्षरां ॥ काहमाशुंयुगृजं चक्राथ
पित्वायिवेततः ॥ १ ॥ उदरस्य चरोगचनश्यते नान्नशयः ॥ परकृत्वाहरो वलुते नश्यते कु
चम् ॥ २ ॥ दृशा शोतिचयुचमहमयविनाशक ॥ कृतांतभयरागंयुतस्मातं विवतेसह
३ ॥
जे देयावजाचार्यकूलहर्षिमानेमापूतकजलश्रुमां ॥

मैत्रु औनमोरमत्रयाय ॥ वृद्ध धर्मश्च संघश्च स्त्रिरत्ना ग्रामनुत्तरं पुराण्यसह सावाय
मज्झिमेकहरणाखरं ॥ १ ॥ स्त्रिरत्नया अग्रसंघो न-उत्तरा मय दया वोन-परमेश्वरवृद्ध
धर्मसंघ-तत्कारतं नमस्कारयाना-महाकरणा वनजुया-चोनस्तमज्झिमेकहरणा
तंसमस्तो विनियान ॥ ॥ संसारार्हिमहाधोर-निमग्नास्सर्वजन्तवः नारयिष्यन्ति मात्राथ दे
शयस्वकथं मूने ॥ ॥ भगवन्तय रमेखरन आजादय कल-हे करुणा वनमज्झिमेकहरणा
दुसइया चोनसमस्तमनुष्ययात-धर्मेसकलान्तरलयेया कारणात-आजादय कसेविज्या
यमाल-गथेवल्लये गथे मूक्तिया यधकं आजादय कल ॥ ॥ आवीजाद कलये वनयय
तं बोधिसराये ॥ रमने माहु विज्ञाति-कथंया लाजिका युनः ॥ ३ ॥ जन्तकास्यं निसेतथा गतया ॥ १

पदमला तो लेया ख. सुंलत नमया म जुल मे मया ये पहल. सुत्रियाये. पहल. शानियाये पहल
थे २४ कं श्री शा के मारोत थ गत के. मं जु श्री नेन ॥ श्री भगवाना ह ॥ संयुतं शु शु मज्जु श्री
सत्ताथ्येक महारतः वृक्ष श्रीः तथा चैव. सुद्राश्च वहि वरा जा ॥ ४ ॥ श्री भगवाने आजा
दय कल. हे करुणा वंन मं जु श्री. राम सु सचि तया अ दा कार रा. वा लान क्षत्रिय वे
इय शु ड. थ ये ना या ग रिया त न थ २ यो गा व यो न अ थ जि न क ने ने हु ने ॥ ॥ सस्का
र आत्रया ना शु शु दा र स्कारा हु त जा ॥ आता पय म वीति माहि व नु थ हे नि सं श्रिता
॥ ५ ॥ कि मं जु श्री न न च न दु ल न या. श्री श्री श्री वैश्य. अ स्व त जा ने या सस्कार
क या य म्प माल वा लान तया. आदि न माल. सु द या हु त म्पार. ग्य व ल समा सय

म ५ आचति जुलं मास २ ॥ ध्व वेल्स सख चोय रु नवे न के ॥ ॥ दम स नो आ नुराग स्यात् वीज स्यां
कूटका र्शा यदा जतु नदा तादः तथा ता ह फलं भवेत् ॥ ६ ॥ ध्व नीलि स्त्री पूरुष अ नूराग न
वीज या अतु कूल दयि व्र. ज्व ले न स सत म जल. ध्व वेल्स स डयति जु युव ॥ ॥ वृत्त न
मो प्र रासे न. मा स के न लु चि भवेत् ॥ ग मी दि ध्व न द्य सा धी क न वी च क्रिया विधिः ॥ ७
ज्व स्तु याग म स दत्त वृत्त या नान नै म या ना व. डय या त न चो ना वः ली द २ स लु वि य वि
व्र या ये ॥ क्रिया क म माल को वि धान थै या य ता ल ॥ ॥ चतुः षष्ठा ष्ट के मा लि स्त्री
म लो य न या दि क ॥ पु थ म स लु ते ग म स या ना मा यि यो यि ता ॥ ८ ॥ वा न न या क्षा त्रि
या. वै द्य या. ध्व स्व ता जा ति या मि ला तो स. ग म स द लु न. ध्व ला या. पु ला या. च्या ला या २

कर्मयागमाल. शीथलपूजा: आदिममंतव्याप्त ५० छोयेकेमाल. थव२कर्मयाग
वहार३०क्रियायागमाल॥ ॥ नस्यागभापिसुयते. सर्वश्रसक्तोभवेत्॥ नवा
नामययाजानेजातकर्मश्रकारयत्॥ मधुप्रातादिंककाय्यथोक्तंश्रक्रियावि
दि॥ ६॥ ग्यवेलेलसुनादयावपूनेजानुजूल. थवेलेलससस्कायायेजातकर्म
याय. मधुप्रातनदुतेप्रायन. मासाकटायाजविधानर्थेकर्मक्रिया॥ ॥ न
त्यर्थेजिभदेवनामि. धपूजातकारत॥ विधिस्तत्त्वपूरस्तत्त्वसमाधिग्रयभावना
१०॥ विधिस्तत्त्वगननेवनेतंजावनिस्तत्त्वसमाधियोगयाजनिहलीकतृपियाय
समस्तविधिविधानर्थेकर्मक्रियाय॥ ॥ कस्तसार्चनंतो जावपूजजहि विधिपूर्वकं॥

मनु कोत्तल्लाक्ष्मणं ध्यायं यवसर्ववर्षिषि योऽज्ञातति लदधि क्षीराजनीयश्च अर्घ्यद्वयाप्रकी
र्तिता ॥ नवाङ्गुलवचनधूच्याः नवाङ्गोर्घ्यप्रसूयते ॥ ११ ॥ यन्नमज्जातर्थे अन्नप्राप्तम्
विधियां ह्यहयकलसपूजो गोमातापूजा-हर्तव्यं अक्षतवैश्वल-पूजा-नद्यो-एकाग्रो
सुहाससाधने-साधेति तथा नमस्वत्वेन याव अर्घ्याय-सप्तर्ष्याय नासया ये अर्घ्ये
सः ॥ नवाङ्गुलीजविम्वारि सरश्चर्मात्मानकं ॥ हृदयहितमोनाभि सुन्यताभावपूर्वकं
१२ ॥ सारिरस्यो नगुगुलीवीजउत्पत्ति सुधियाय अर्थे नरक्षायाय अर्थे आचार्ये न
थर्थे भावनायाय मात्म-यत्नं लिनादि हृद नयाय शुभानाकरुणा भावपूर्वकं स्यात् ॥
तथा गतो यत्नवततस्वभावमिदं जगत् ॥ तथा गतो निस्वभावमिदं जगत् ॥ १३

गथे ध्यानसासमस्तससारसम्बन्धगुणित्वभावकुल. गुणित्वभावजगतसंसारमात्र. अभावभा
र्यात्रनादिदेदनयाये ॥ मिधाविधारणीश्चैवस्मृतिविजयातथैवच ॥ यथानिप्राप्तयवा
कदाज्यं च. स्वस्तिवाक्येचकपूर्वक ॥ १४ ॥ यत्तन्निमहाविचक्षेत्रपरिदत्तज्ञानियमिसेन
धारिण्याथयाये. स्मृतिविजया आदिनयाथयाये. देवतातदोयेके स्वस्तिवाक्येपरये ॥
मथैवस्मृतिनदानश्च. मंगलोत्साहवर्षयेत् ॥ नादिदेदकृतयेयेयस्याचयुतकंतथा १५
यत्तन्निमोल. रुयकेदानकर्मयायेमंगल. वाय. धातके. नादिदेदनवेलस. ग्वस्य
मवाजुस्थिते. यत्तन्पूजाकर्मयायमार ॥ ॥ युतकानेप्रकृतिपूजासकर्मकायेत
अभिषेकंततोदत्वा आशिर्वादीहस्तदादि कंपूनः ॥ १५ ॥ यत्तन्प्रकारतकर्मक्रिया. च

मनु

४

नकाव. कलरा॥ निमेकविशे॥ ओं भैरवे कौतमी अशिवावा दलक्ष्माविये॥ ॥ इति आत
कर्मेनारिद्वेदनविधि॥ ॥ तथैव पूजयेत् सर्वसमाधि त्रय भावना॥ सारिधान्यवध
त्यस्थ. पक्षीदीपयुजास्तयेत्॥ १७॥ अथ ह्यं ह्यं सप्तसंयान्याव. पूजा फं पुक्रातया मत
व्यात ३०। होयेके॥ ॥ तथैव कारयेत् पूजां जागरणाधिधिनि कुर्म॥ भमा भका समन्य
चयि २था कुं ग्रहसाधमेत्॥ १८॥ अथ ह्यं कयाया थ्यं कर्मे क्रिया याय ग्रहसाधनया
यग्रहसाधिकाया थयाये॥ ॥ हसनेहा ददो चागो ह्य विइति वापुनः॥ नामेकमेक
र्तय वरा॥ नाच विरो दतः॥ १९॥ अथ २या आतया पुमान् थ्यं जिह्म पिह्म जिमनि ह्य पुहु
नामा कर्ता याय वरा विरो विषे घर्त॥ ॥ मोन त्वा म्नि विपु रश्मि ह्य दक्षत्रियः श्री

४

षां गृह्यति वैश्याः कषीक सुदुष्येयरातः ॥ २० ॥ वृषा जाति या जुलसा नृनि पद नये- रा
जाया मद पद नये ॥ वैश्य या जुलसा गृह्यति चक- वा जे सुदुष्या जुलसा कुषे चक-
वाये ॥ ना मतये ॥ अथ वण वा मरास्य मत इत्य- व म्मा नृदो- क्र म्मस्य प्रप-
रित्युक्तं स्त्रीनां चानुकुमाचूये ॥ २१ ॥ असा निकं का हान या मदा म्मा यथा म्मा त-
व म्मा चाये वैश्या यात गुफ वाय मिमा वजन यात थ्य क म्मा नी म्मा ज म्मा नाम म्मा क क-
या वदी चक्षिरी चक ना म्मा दये ॥ सुदुष्ये थ्य येदी चला चक ॥ ॥ दी चो सर- तु नारि-
नां म्मा जला थ्य समान्यतं ॥ मासे नृनीय चतुर्थे वावा ल वदी चो दीवि- अ नृना सये द-
मासे सवत्सरे इथ वा ॥ चार नी श्र पुर स्क न्य शा ला दि शि लि क म्मा क ॥ २२ थ्य नो लि स्य

मनु

५

नादया कावयि लाकेन कावथ्य सवालष. सुय्ये जो ये के धन लिजत को अन्न प्रायन
याच के फूस लादय काव. या लास अन्न प्रायन कर्म चार नियुधि हुवने तया प्रसफ
नी जामर आदि अलं कालीति सावसु. चा. थथि गुवसु तया व्र कोल के हु याच कं गव
सि वसु मो चान काहु व गुलि वसु न के मी या या ल विरिये ॥ ॥ यः स सत्य थप्रमं वास
स ये व कर्म जीवति ॥ चूदा कर्म के रा मे दय था स ल्ये च कार ये त वस अत्रिय वे इषा नां तु
दा मो चेत थे वव ॥ ग मो सफु म व सखी या व न हा द ट व स रे ॥ २३ ॥ थं न लि चू द क
क रा या य फूस हा यो न ट व ने क थ ने क मी या ने हय वा हा ने या क्षा त्रि या वे इय या रु द
या क था ने उ थे २ क मी या य मां या मं स जो नी नि स ल्या स ख या व क स द नि स्यो जी स

५

निरम्भं द्यावुत्तमः ये तं ये द्युये जानि विये ज्वमा विये थव २ याम ज्ञानि कर्त्तव्या यत
थाग याता सनस ॥ ॥ पूरक न्यायै सं च श्रुं गुरु या ध्याय ते वच ॥ कर्म सु श्रीयता
रेता कर्त्तव्या समहात तौ ॥ २४ ॥ हेतु गुणान्तरं दधक चालसा गुरु उया ध्याय था
कारि नो कोपु मात न हन चामा वक्रियाय कर्त्तव्याय ॥ आदी लिख रणां देयं
तनः ॥ शिक्षा दिपं चक उया हक वत श्रुं वि विना केशा वता रणो ॥ गुरु स्थ नाम यो रण्य
जना मो रणां दूषकं ॥ न काय ना मरु येन कर्त्तव्या चात्रे यानि के ॥ २५ ॥ ज्ञायां बुद्धि सं
र्गः संघर्षं सरन वने न मो व धाय न मो ध्याय न म स्सं धाय ध्याय के ॥ ध्यनं लिपं च
शिक्षा विये थनं लिखि जानि का विये थनं लिख सखा य गुरु स्थाम धु पु ये रल सा ॥

४३

आगसतयेके. गृहस्थानि शुभुयमश्वानवस्ववनवासेनुयचनसकसंस्ववाय
थनमानकोउयदेसविच॥ ॥प्रानाति यातपरस्व कामाभेथानृतवच॥ सुशायनादि
कंयंचाविरमनादुयाशकवृत्त॥ ततः केशानवतीर्ष. स्थायनेच्छाशिरः॥ कायाय
प्रदातवांदशाशिक्षायादयनः॥ २६ हेतुः ओनेयग्वहामि शुभुयमंदाउवस्वपु
हस्वनप्रानिवहयायमतेवयरदवा. यरास्त्रिसेवलयेकरतायकायमशुयानसेवलये
थनेकानायचासिक्षाज्ञाय॥ नृत्तगीतंचवाशवमालागन्धविलोयन॥ वशांकवस्त्री
हाशचाउचंदायतिथेवच॥ अकारोसरनस्वशांचिरुयाग्राय॥ भवेदृश॥ ततः श्वची
वस्त्रोशीमिश्राभाजनकृशोका॥ संचास्त्रिशोभददर्शनंदिक्षारिकाचशयनेर॥

वन्तारमितासमादानमार्थसत्पादिरसस्वरः॥ २७ ॥ पश्चाद्विशिष्टाध्वनौ हनौ दसद्विष्टायास्व
करोद्वमहारे नानावाधायत्वा कस्वाननद्वय. नस्वाकन. नियनयायरं जवसुन
नियलिवखाता आदिन बो जाया व बो न. आसेन स बो नः. अ वेल स न य. सुवरा आ
लकार न नियमनेव. ध्वनिता तो लने माल. ध्वनलिस्व तुलि बो वल व जायु पियर या
त्र. द्विष्टिरिका क काल. लव जाय ॥ मत्पारा मता या उ य द इ वि य आ र्थ सत्पादि
सक्ता नये ॥ ॥ तदय कोटि शिष्याश्च बो धि चित्तप्रदाय येन ॥ एते सं ग्रह या मि
धुश्चा मने रे न द्द कं व ल कं व त द्द न व्र य या न वि भा व ना त ॥ सर्वे ध्या म ग्र शा मि
धुः यज्ञ का र्थ्या दिवा ज्ञत ॥ २८ ॥ ध्वनौ ले को ति शि ध्या वि यः व नं लि बो धि चित्त ज्ञा

मउ

निये ज्ञान लात नात्र मिश्रु धाय. धने या वा दिशि ल्या लातो नाव श्रामनेर क धाय. श्रामनेर
कया वद्धि चैर क धाय. धस्वस्वया भावना थ थ्य थ्य सक ले यां उत म मिश्रु धायं होम क
र्म या य मड ॥ ॥ निर्वीणा शय भूत त्वा त्रिर ये क्षस्व भावतः ॥ वज्र घराठा दि कं होमं सर्व कर्मो
नुसा धनं ॥ हाभ्यां मे व यु दत त्वा वजा धा यो य दं यु नः ॥ स स्ना दि मं व या धं च मरा लं द द श य त था
२५ ॥ निर्वान य द ला क र्मा मे व या के उ ये क्षा म या क र्मा धार्थिं श मिश्रु जात वज्र घराठा आदि
यं. होम कर्म या य स म सं क र्मा या स द्वा चि कार जु रो. ध्य व नि ने स्त स वजा धा यो य द वि श्य महा
यान सूत्र आदि र्य या ध मं ग ल द द श न या च के ॥ ॥ भोज नं दा दे शे व र्षे य म नि य म मे व वा ॥
त्र या नां अं धि व रा नि षे का द सै षो ऽ शः ॥ ऽ य न ये नं च क र्त्त व्या य धो कं द स त नु के ॥ शि र यो धे

चोनेसाकायंमतेव ॥ ॥ यज्ञागाधोऽष्टक्षेत्रं च ॥ रविदरासुम्वताकैकं ॥ अयामाग्निकद्वन्द्वश्च
गुह्यायादूतवाचनं ॥ नक्ततया भूयो लोष्टेः मधुकाकुलिभिस्तथा ॥ अभावेदन्तकाष्टानां यं
त्र गटाऽखकेः शुभोः ॥ स्मृतोः सखा नये हो मचीवरशिखा वफत् ॥ ऐशानामिभूखं कन्दामल
मंत्रविपर्ययेत् ॥ ३० ॥ हनंजशसगेलकोसि ॥ दुहुद्वाव जातिजुलसां ॥ खयलसि ॥ अम्बसि
उलसि ॥ अक्कसि ॥ अयामाग्निसि ॥ यथिगुलिसिन आबुद्धालनमतेव ॥ अतर्तमतेव ॥ चो
लायविनमतेव ॥ अतावे ॥ दत्तकाष्टमदत्तसाकसयोत ह्युतुचो लो न हु वि ॥ घाल आसन
यानावदिशा चोने ॥ मोदस गानपूयावदशानादिशा खयाव नोनम वाइय मलमूत्रन्यागयाये ॥
अथका ॥ शुभोदियपुष्पादिनां मध्वे च उरु मूर्ख ॥ सध्यां द्यनिशाकाले दक्षिणाभिमुखं

मनु विदुः ॥ २८ ॥ आसाकं न सुखे यदि वेतसपुर्वस्वये वा क्रिस उद्धस्वय स च्यासः सः पितृकालस
दक्षिणस्वयथालियुक्तारसुचिपवित्रयायः ॥ ॥ यिथायमरमन्त्रं च शुभक्षत्रं समा
वुजेत ॥ प्रथमे जलसो चतुर्द्विरे मृत्तिका सुचिः ॥ पुनः पुक्षारये त्रितयया वरगभ्यनवर्त
ते ॥ यथायानं तथा गृहे - हृत्संप्रक्षामरया येन पुनः पुनः मयि यकं - आलागते न नो मिये ये
थे न सुचिः पुनः ॥ इति शुचिनिर्दसः ॥ अथ स्नानमाह ॥ चानस्नानं माह ॥ चानि शुनां मंत्रा
नं च श्रामने चेलकानां जलस्नानं वा स्नानं विस्वतः ॥ ॥ थनि मोदकये विधिः ॥ भिक्षु
या जुलसा - चानमात्रं न श्रामने एकया मंत्रं स्नानं चेलकया जलस्नानं विदुः स्वनं वा लयामो
लहूय मालस्वनं ॥ नवादिदं मलयिकं - दुर्गधर्मो नो शुचिः ॥ स्नानेन शुद्धते देह ८

दं चो मे कुनां श्रावका नांत धै वच ॥ संन्यासयोगं श्रीरां स्त्रियता चार नै पुनः ॥ संघाटि चीवल
त्मा तटीः ॥ श्री भ्रातुं श्रमा जनं ॥ कृति कां चो न यार् चै न प ॥ ज्ञान विशुद्धि भागः चो या य
न था घराह प्रज्ञा पार मितात्मका ॥ दाम्पति परमा र्थे न त थ ता या ज्ञान निमित्तः ॥ ३० ॥ जिम वि
द दत्त ता व स म र्त्त भा जन के ने. स म स्त ने स या च के. थ स्व हा जा न या या हा न या क्षा निया ने
इय या ॥ ज म खु द इ क र्त्त क्रिया या य म र्त्त थ थै थ क द श त्र स हा से त ल वा हा न जु हा सा
उ थ्ये म सु द या जु ल हा. जा ने वि ये. क य न न्या द द रे जि द द ले. जि म खू द ने हा ॥ स ता ती या
जु ल सा म र्त्त क्रिया व. योग चार रे ये या व स्त्रिय द धार ये ॥ जि थु या जु ल सा ची व ल न क र्त्त थै थ मी था
म या धि र्त्तिका कृत्वा ल. यि रा या न. य श्र द्धान वि शु धि रा य. व ड् घ रा या न मो रा य प्र सा या स

मनु
६

मोताया आत्मफणियः स इति सत्यपरनाथसत्य. इह लोकपरलोकासंख्येः॥ ॥ वरान्ता अ
ग्रतोवृद्धः द्वादशाक्षसमग्र भां त्रीलोकव्यापिमिव ऊर्वध्वसदाभवः॥ ३१ ॥ वासराक्षत्रि
यवेइपसुडः ध्वनिना जगित्या उन्नम जातव वगावे तु वंध्वधारसा. अहमेह सुखं यानि ज
ध्वख्यवर्गम ध्याता लखं व्यापारवृथं धिं च वंध्वधारो॥ ॥ इति प्रवर्ण्याग्रहरा विधित
निययडले॥ ॥ शाकेर्वं सप्रजावं धागमना च युजायेते॥ प्रवर्ज्याग्रह नो मिधु. पुनरुहस्यव
उच्यते॥ ३२ ॥ शाकेनेन गरससाकेकुं भारया कूलसजन्मकाल. जन्मकायतुनु. शुद्धप्रव
ज्यायायतुनुं मिधु ध्यायन्न. नालिव ऊच्यते धररयव जाकाय्ये चारे॥ ॥ लोका बालपु
वक्ष्यामि. सत्यानां हमायव॥ येन संकरे नित्यं मूलैस्तुक्तिफलं भवेत्॥ ३३ ॥ वजावाय्ये

६

जुलनादसमस्तलोकयाकेचलयेमाल. द्धनिमितिमंचालसासमस्तसत्त्वहितययथायेया
कारनसग्वहनशास्त्रसचोनर्थचलपेलवस्तरागमिस्मिन्कललायिव॥ १॥ प्रातरु
थायशुद्धागोस्थित्यामृतीमिसखंपून॥ स्वाधेदेतामयोगनजपर्योन्नसमाचरेत्॥ ३४
प्रातकालेन आयदनावधन आत्मा सुद्धयान्यावपूर्वादेगस्वयावधकईस देवतायायोगा
ययारननेयया॥ ॥ ततो द ईशं विन्यासं कृत्वा ततो हस्ततावकुत्रे कोरमिकतवृद्धिवा
नगराद्वहिजरां भये॥ ग्रहनेवरातिदेन. मितिकादंनकारेताकं॥ भुक्तं तं तथा पीतकहमेय
सुद्धिमिति॥ ३५ ॥ धनं तो. अग्न्याययाम. करनगटायाय. ओरेनिदेसवाहि विविता
पुनलमृत्तमगयाय. फलतो कोर. मकुतमवाकोर. ग्वगुलिवागमलायदतवेमुलि

मनु
९०

आयसदिशा चोनेथं २ जातियाविशेषतं चाकार्ये ॥ वृषा जातिया-तोय चाकार्यक्षत्रियजा
तिया-ह्युडचा कार्य-वैश्य जातिया-हासु चाकार्य-शुद्ध जातिया-काहा-क चाकार्य-चानव्या
वृष्णि चियाय ॥ ॥ ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यः शुद्धानां चतथैव च ॥ नदिदेवालयचैत्यइमशान
नहुष भूमिषु ॥ नग्रासयेतुतिकानतविशेषोत्सर्गकर्मसु ॥ गोपुष्पभस्मपूजेषु प्रतिष्ठा
श्रममंडये ॥ नकर्तव्यापुनर्न-पूलीयोत्सर्गकर्मकं ॥ ३६ ॥ वृषाक्षत्रियवैश्य-सुड-थु-
तिलोकस्यनं चाकार्यथासथर्थि २ आयसमतेव सुसिदेवालयया-चैत्ययाइमशानयाइसभ
मिया-थतिथासयाचायाचाकार्यमेतेव ॥ हुनंथर्थि २ आयसमतेव-सोथस-सुसानसमा
र्जसुमराइयससुसिडिस-देवालयेथाससवैत्ययाथायसहुषभूमिडा-थूलिथयेस-दिखा

९०

नस्मान्स्नाननुसर्वशः॥युधसंमलस्नानं चमंत्रस्नानं द्वितीयकं॥ध्यानस्नानं तृतीयं च॥जल
स्नानदानं नददत्तरं॥॥आवरेवनासुचियाययस्मान्॥ध्वं वसरिरसुगुं ड गुलिवा
रुद्व्यगुलिद्वाल्॥अयवित्रनं॥अयवित्ररा॥असुचियानं चोने॥अयवित्रनालप्रलयावः
चोने॥ध्वनेनिमितिमिस्नानयायमालस्नानयायनवधनपुन्यसप्तसंयुक्ता ररास्नानया
यमालकाया लैखस्नानयायमाल॥ओ नलिमंत्रस्नान ध्यालि ध्यामयाय ध्वनेलिजल
दानयाय॥॥असयायेनय्येनयावरे॥रुनयीतेचातवासकं॥ध्यादपत्तीयद्वाना
नातस्यस्नानं चानिस्फुल्लं॥यमूठाः स्नानदानं च दशनेव क्षालयेत्॥सदा॥पूर्वसंनक्षित
स्थानां दनस्नाननुस्नापयेत्॥तर्प्यरास्नानदानं च द्वा यज्ञध्यानं जपतथाता॥॥

मञ्जु

११

पराऽचक्षुरायतनं स्मरते ॥ ॥ मोडकस्य लि. देव यात. तर्पणमयसि. ध्वनति चायमने
अज्ञानिनं ध्वनति चालसा. मोडकया यावेथ निष्फलं तु य ॥ यत्तु सर्वं न मोलं हूयावेति
देव्या धाय सं मोडकयामतेव. क्षामा मा धास तोलताव. निव धास तत्तत्तव मोल हूये. तर्प
नयाय. जय ध्यानयाय. सपेक्षया यमा ल. सपोक्षमव्याहये. सफलं तया व. तर्पणया
तसा. सकलैककर्म्या निष्फलं धाय. सोपोलेम चास्यं सलिलया स यात सा निष्फलं धाय ॥
ध्वनति समस्त देवता याता ॥ देवतो न्यासयेत् सर्वप्राणागतमादि कर्षण ॥ देवतो तर्पणं पुष्टय
श्च पितृ तर्पणं ॥ प्रेतकुलितेनाः कायं ततो वक्ष्यादि पीदयेत् ॥ त्रिसरणागतमनश्चैव यापनी
पटिदेवता ॥ पन्थानुमोदनां च पितृ संवर ग्रहसादिकं ॥ ॥ ध्वनति समस्त देवता यात. तर्पणं

५१

शादियायप्राप्तायामयाम. देवतागरा. पितृ. लोक. तथ्येणयेतांजलिद्वियवनलिवरुनतिय
त्रिरासापरसायायसमस्तयाययाखदेशनायायसस्त. पुन्यकर्मस. हवमानजुयुसमव
रग्रहनयाय ॥ ॥ वीचिचित्तोत्पादनश्चयथेधारत्रयसदा ॥ चेत्याचैनततः कार्यशुद्धा
त्तामौनेसुवृत्ति ॥ पभूदियानिचसमस्य. सुचिशीलययन ॥ आदिकमात्रितायेच. यथो
क्तविधिकर्मकं ॥ नित्याचैनचयत्कर्मः तत्सर्वकारयेत्सदा ॥ राहुषंदडीक्षोदुःखप्रमेधूने
भूते ॥ तिथेनेमित्तकेयचनित्यंस्मानसमाचरेत् ॥ अनेनविचिनानित्यं. यत्कार्येतिमहा
मति ॥ इहनरेवजन्तानिवृत्तंशाय्यतेवीचिसरायं ॥ ॥ वीचिचित्तउत्पत्तिशुभावरधारानि
यदलयेयेयेयुजायाय. आत्माउचियाय. मूमा रेकंनोनमजोय. पंचद्विदिनिश्रयाय

मंजु मतेव चाकोयसार्धः नेमयाय. शुचिस्तिलयायेत. चतुरजुयद्रयाद्रास्यंतयाथेविचिविधा
 १२ नर्थेचललयेनित्यकर्मयाय. ध्वजास्यतकोसमां धारलये ॥ हनौग्रहनसोले. लुसिग्वाच
 याये. सषायेसः ममिज्वलित्ताटे सरस्त्रीयसंगयायेस. तिले. निविन्नस. नेमिति कजुरे. ध्वते
 तुलेमोद्रयमाल ॥ हेमंजु धीतव्रधनवूद्धि थूयावचोनस. ध्वतेतापुकाररायायमाल. ध्व
 ध्वइह लोकापरलोकसंवृद्धयदलाय ॥ ॥ पूर्वार्द्धे भोजनं मिथुः सफुगु ध्वति काय
 दि ॥ अयटाद्धे भोजनं सफु सर्वेषां वसस्थिते ॥ सुखासमने भूमीतवुतनेमिति कविना ॥
 येत भोजनसुखं. भोजनं नित्यं लभवेत् ॥ यज्ञां धातुवृद्धौ ध्वते भोजीन्कदावनः ॥ प्रमा
 दाभोजनं यस्मिन्प्राप्य चक्षमाचरेत् ॥ ॥ आवपन्नमिष्टुयनित्यं भक्ष भोजनं याय

सुधयाङ्गसघलिनलिवरुद्रियाङ्गसघलिनलि. ध्ववेलसमिधुभोजनंयायसतल
लोकयातिभालनतुयेकावभक्षाभोजनयाधेतेर. निभालमदयेकतलसासतलंधर्म
कर्तव्यतयाको॥ धर्मनीस्फलंधाये. ध्वतेननिभालनतुये~~भक्तमक्षभोजनयाधेवि~~
स्यालिनतरसावेनभोजनतुल्यधाय॥ हनंदुंवलसियाकुसगुलितोयज्ञयार्थसिद्धसहो
ताजुलोत्रालिसिद्धायाकोतचोनावभक्षेभोजनयातसा. वृतधर्मियाकोनिसाटमउ
वः॥ ॥ त्रिकोटावर्मलं वैव. चतुकोटावध्वत्रिय॥ त्रिकायवर्णमिदेनूकालयेनो
जनं॥ असंयुक्तनयानंचसग्यधंश्रायभक्षनं॥ भोजनानेष्टुतंभूकीतुल्यगोमांसमक्ष
या॥ ॥ हतोभोजनयेयापरिप्राथय्यजाभोजनतलसविर्कोटाचोयावजाभतयेव

४३

१३

सज्जाति यावर्भूत चोया वतये जुलो धौ विषये यज्जाति ये जाति याये को ह्येक वैश्य जाति याः सु
दुया - लंखनं शुको हाय - थ्य गुलिय कारणा भोजा रो जा सो द न या न्या वत य जु लो भोजा
विषय नं थि सो लि - धिल न ल सा गो मा स वत न्य भा लये ॥ ॥ वलि च त्रं य फार वा अथ
मना च ततः पूनः ॥ यं च युति कः ॥ गृही यात अ ध्यात्मा धिन मंततः ॥ ॥ धे नं वि वलि विषय
नो सिये - वलि पु न्ना न्या पु चलते ॥ अथ वा आत्मा संतो य या ये ॥ एवं तु जी जय मि धुः आ
वने न तथे वच ॥ सं त्रेणा वत रं क ताः भोज ये त रु द्र मा न सा ॥ वज्रा न्ना न नित्या भग्न
हन कल यं दक ॥ पु ध मा न तान रतो र्वा द्वितीयं ज्व मा भूत य र्वा ॥ आति थि यो नृ ती य तु च
तु धे वलि क मी कं ॥ से रवानु भोज ये व जी - वा यु यं च यु यी नने ॥ अनासि का या रा वा यु स

१३

अथमात्रानमेव च ॥ समानतर्जनीज्ञेया. कनिष्ठायानवायवः ॥ व्यानवायुश्च. जेष्ठत्रय
श्च तथा गतात्मकं ॥ ॥ भिक्षुयतिस्म. श्वगुरित्वश्च न मोक्षनयाय श्रामनेनरक्या. थ्य
थ्यं वज्रा वायव्यायं थ्यं मंत्रसोचनयाय. मोक्षासोचनया न्यावयंश्च विलिविज्झायां अमृता
नरसंतोषयाय. अनात्मिकान. अत्रानवायुवशाच्चो मांशो लनं संतोषयाय. समानवायु
चो लानं संतोषयाय उदानवायु चो लानं संतोषयाय. व्यानवायुश्चालानसंतोषयाय थ
थ्यं च तथा गतया आत्माद्विकसेये ॥ सदायागुलपंश्च पुनः दशवायुप्रतीषणं
द्वितीयायायदाकानां मदाकां नंतर्धे च ॥ वी. जानतथा कणा नुटा सनहास्ये च वज्र
यं मोक्षनंश्च ॥ ॥ न्यायाचनं. गजलमनकावनयायाफल. दशवायुसंतोषया

मः

१४

ये अर्थननयावेलस. मोलस कयालस राहातदिच केमते वयाट जु क चोयावः पेनं वमथिय
कंन॥ येमते व. योरिनयिवने. एहाततया वनयमते व. तुति कोताव हसतं हटा वनयमते
व थथैमयासे नलसा प्रुवि थथैयातंसा असुचि॥ यमास्यवा उपासनाश्च नहि तविक
तामनं॥ पीतसेयं नपूतः पानः सखातसख्यविवर्जयेत्॥ ॥ दक्षिनसोयमते व. ख्याल
सेनकावनयमते वः. चेयं थिये काय फो आगुलिनयमते व॥ ॥ सावधानं भवेद्यलु
स्ववरादिष्ववराके॥ उपवासोपिना भूया ध्यान जायेत सुधाति॥ ॥ भोजनयवेलस
थवजातिया के नमेव जातिया के. चेयं थिये थिये चुरासा. उपासन जा नेमाल जाय ध्यानं न
तुनिचिजुयु. अहाय ग्रहि प्रनानं॥ ॥ गुराः पोतु सख्ये रां न भूयते पि भूदेवता॥ तस्मादुति

१४

सिद्धयन्तश्चोपासनाभक्तः प्रीतमंग यावदुत्तिष्ठेत्तु यश्चाप्युक्षालनं मृद्व ॥ ततो कुर्या
शेषि सार्धं शुभ्रतया परिहो धयेत् ॥ सन्नातं मृद्वे न्यश्वाभावने धर्मा संग्रह ॥ ॥ भोज
नयाय वेत्त स होतु चोत्ते नोसिय कूतु चोत्तान सन संयेत लोक यितृ देवता संतोषतु
युः थनेय केने हतु चोत्तान मालनया रलि अन्न लेन के माल सच कनय मत व थ
लेन गालिन स मल मूल गन संतोष उय व लेन कलतया गालि रलि सिय कूतु चोत्ते
वैलि भिन केने शिथि सुचिय विन्नया सलिल सो धनेयाय ॥ मूक शिर आदन मल यान सुत्र यदल
येः सधर्म याथ याय ॥ संध्या या समये यश्वा मंत्र भावनया पुन ॥ सखी या भक्त सतो रय गुरु
ध्यान समग्रत ॥ गुरु देव युगाद्या दो जय तोत्रं समाहितः ॥ उन्नरे चोत्ताना गं चयः यश्चि मस्य स्व

मनु

१५

यंवद्वः सिद्धसंख्यासयाह ज्ये. चारणी चानतत्परः ॥ ॥ ध्वनरिसंख्याया अवसरसम
जुभावनायाय एसाय चोनावदेवगुभावयायायः चानयाय न्यासयाय गुरुदेव्याव
रनसनमस्कायान्याय जाययाय. एसा कालस उतरखया बवाचासप्रश्चिमस्वस्यसिं
हगयाव चोनाथे नाथे ध्वनरुदेवनेमेव महु भालपसने चारनी पदलय. लुथनुलसाप
वेसोरय. वीरु नरोदक्षितरसास्य चानयोगयाय ॥ ॥ इति श्रीमनिदु भगवान श्री
धनमाधननिष्ठा चारणाविधि पठलद्वितीय ॥ ॥ अथ मनु श्री भगवतद्वोचतः
ध्वनीसयरमेस्वरमनु श्रीन आश्रयकलः हेमनिदु हेमाकमोरो जीननेने आश्रय
कविज्यायेमाल. गधिनेछ लपोलयावचन चालसा नवासासुतुनहा अमृत

१५

वचमउत्पतिजुयावमान. गुलिदिनंगोस्त. अज्ञाननं. मसिंख्यं. वृत. धर्ममयुगपुथे
यायुवथथेजुलनावथुगुलीयागयापारयाय. थेमालधकंनेन॥ श्रीभगवानाह॥
श्रीभगवानाह॥ आहृदयकल॥ यमदालं चयेकमवृत्तनिशममेवच. मासेनसुचतयाय.
दानधमोयवासकं॥ ॥ गवता अज्ञानिमुखस्तनवृतधर्मया नावलसकोधउत्प
तिजुयानाव. कविंगलनसतसा. लहिताइयासतचोनेलहि तोयनकं प्रिथदानयाय
मालथथेयानातुनिपायमोचजुयु॥ ॥ नित्यकर्मोचोनाश्रयेजपध्यानतथेवचला
नरातेयवासेन. विरात्रेनसुचिममभवेत्॥ ॥ इतोयस्तानांनित्यकर्मयायलमामन
जन्मयायहसमनध्यानगान्नसं च्यायायहसमनथथेजुलनावखवायेहृताक्रियं

१५

१६

संस्तुतु जमा लउपासन चोनेमालदान धर्मजपतो नयाय माल. ध्वनि स्तुति जुयुव ॥
 वाचा चय कृतपायंत कयारि किर्तिंत ॥ काये नय कृतं कर्म महापाटाजिकं भवेत् ॥ य कृतं
 चित्रय अपिं डय पातक मूच्यते ॥ ॥ तुलितो वचन नयाना माप जरो ते वच कथा स्यंत र. स
 रिर नया माप महापाय महापाटाजिका धक धास्यंत र चित नयान्या माप डपाप धक धास्यंत
 ल ॥ ॥ चत्वारो वा वि कं या यं त्रि प्रकारं व देहि नां ॥ चितं जं च पुनः त्रियं नृते या यस्या
 लकं ॥ ॥ वचन नयाना माय ये ता धक धा ल शरित या नायाय स्वता धक धा ल. चित
 चित या नायाय स्वता धा त्रि नायाय दु को या हा ॥ ॥ प्राना नियात अदता दान. काम मिथ्या व
 कायिकं ॥ काये न कृतं यायं काय कृता प्र मूच्यते ॥ मृदा वा द च ये शुभं मा हस्या भित माख

१६

नैवैविकं चकृतं पापं वा केनैतन्मृच्यते ॥ ॥ अनिवक्ष्यानायाययः मेवयावस्तु कसलोभया
न्यायाय मेवया स्त्रीया के च ललयाया पापः थर्ते स्त्री रसांया न्यायायः थवइरिदुःखसेया
वमोचके ॥ कसलखरु न्यायाय दोखवोरु दुदुवचनथिथिविरोध्या न्यायवचनन
या न्यायायः वचननंदुःखमेया वमोचके ॥ ॥ अविद्याश्च व्यायादमिथादाष्टिचचननं ॥ म
नसाचयः कृतं पापं पापमतस्थापैविमृच्यते ॥ ॥ मखविद्यामतनकलनायायमतन
तसिया न्यायायः थववचननत्रय न्यायः स्त्रीवयातावमतनमोवके ॥ ॥ अपवित्रश्च
मवेतस्त्रीमत्रात्पुनश्चुजाते ॥ शुच्यग्निस्येइनावापि भूमौ धृत्वा जलं सुविः ॥ ॥ अ
पवित्राय यकुलसा मत्रनश्चुडयाव लं न हादाश शुचिजुयुवनिभालयान्या भडा

मनु

१७

आदिनं शुचिगुणयुक्त्वलखजुरसाभूमिस्पदितनावशुचि॥ अनित्यदर्शनइयं भव
राणासिष्टस्य दर्शनं॥ मलमूत्रविषगर्जचतुःषितं चपूरस्य दर्शनं॥ मतेव गुलिलखयाने
मतेव गुलिलधियातनयो गुलिलचिपधियातनचोनेखिनकिफया लखंतधियातनं ल
खनचायानमो लजु ह ह यान सुचिर्या वत्र उयु॥ जाचम्यस्य दर्शनं कायं त्रियच
सयमेव च नंदोषं कोर्येत॥ मतेव गुलिलमतेव वसु कधियाया॥ दूधारख चारनाधा
रनासिष्टसुचिगुणयुक्त्व॥ धर्मेयातनसादोखन मं सुखकायाय सुमंयातन॥ ये
कविवाहायात्रायांतिथे देवालयेषु च॥ देशविप्रवसंग्रामे महा भोज्यच गोदुके कामत
संचसस्यसं शुचिका चरजस्वरं॥ चारादा लङ्क कटंदुःखी महायातकी ननु न॥ मा १७

चिकी सुराचिकी नृतस्यानुचरणेन. सचेरस्मानमावर्त्यः पंचगव्यनशुद्धानिप्रमादान्दर्श
नसर्वस्नानमन्त्रेणाशुचिभवेत् ॥ ॥ होमकर्मयानावेलसविवाहास्स ज्ञानमया
तसातीर्थवनसतवचनदेवालयस. देशउतवनजुषथासस. ग्रामस. समग. आदि
नातनध्वनजुषमोजसग्वाथस. कामयानावेलससिकर्माधियासमाब्दावृत्तमिसारज
स्वराजुष. चाराडालजाती. खा. फायापिपुष्टस्वस्विवानाय. युनसिकयालिवरुप्रन
फनिपियास. मालरुयादयं वगवा कयावशुवजुषुष अतसथियेमनेष ॥
थथोजुष्यनको. कयादयत्तमहस्यधियावसतसास्नानयाथेमन्त्रनजुक्रयाना
नकमायायमालथथानं ३ विजुथिय ॥ गदभुकेचनानिथवाशिचने ॥ ग्र

मञ्जु

१८

मिधर्मरथारोहे सचैलखानमाचरेत् ॥ मासिकियाः द्वात्रैरासुतकायादसाहर्निरज
सहादशाहेन सचैरानतमाचरेत् ॥ पूर्ववस्त्रयारित्यागशुचिवस्त्रेरायावृतं ॥ सचैचमुख
पुदुष्टस्यगोउहाहेक्षोरसेधुने ॥ अजिनेवृद्धिकाय्यचरमानमेवविचियते ॥ ॥ रोगीजु
रेः होमकर्मसमिथजाग्रासदीक्षाकर्मसग्रासजुरेधर्मकर्मसथथेजुरेमतेवराधियान
मोलहयानंगाकः सासिकजुकारेखचायेहूनशुचिः सचावयाजिहूनशुचिः वाधायेना
याजिमेनिहूनशुचिः थतेयामतेकथनमतेवकयकस्वयायहायायावस्त्रतिलतावमोल
क्यावनिवस्त्रेनमित्येः थतेनशुचिजुयि ॥ थर्थेसमिनसग्रायाः मतेवसग्रायाथर्थेमते
वार्थेयायाथवथनववेरसः सखाय ॥ लसिकायप्रसंगयायः अनिरुंरेयाथयाथथिन

१८

[illegible]

मनु

१५

खनं हाया न सुचि ॥ कसवसु कसि-जलभरा-नासिनं वोय न सुचि-व्रीहो कल-
के उर उलं खन हाया न सुचि ॥ सिनज्या ना थल-चानज्या ना थल लं खसिलान सुचि ॥
चानज्या ना थल-सिनं ज्या ना थल भाश-चदा लनं थिल सायं जग वन हाया सुचि ॥ चार
थसि खल उना तो लना माल मते वलुका थल सां लं खनं हाया न सुचि याये माजि वना
नाश जुलो ॥ स्वमा वसु था थन सुचि याय जुरो ॥ ॥ इति श्री शाकम्भूनि भाषितं-महाय
जिका या सुचि नि य भूति य स्मा य ॥ ॥ अर्ते छि के या सम्य क न वा वि वि नी रि ता
ससा वरा विमग्ना ना शो वृत्ते थं चो दि फि नां ॥ ॥ आव य ना य र लो क श ने या त सम ति छे य
या ता कि वि वि चो स्पं त या ॥ ससा र स च न ग्ना न म्हा न्या न स म्भू द स य र-र या व वो न्य या

१५

नरकादि भोगसपरयेन माल के यात विविध धर्मे ॥ यथोक्तं अमिसुत्रे च सर्वविधा विज्ञा
धर्म ॥ कार्याभि सव्य सत्त्वानां क्रियाहि ने विज्ञेयतः ॥ गथे अमृतसुत्र सहासित्त जय
समस्तं याय न स याय अर्थ न सकल सत्त्व लक्ष्या यानि मित्रि न जि न धव फला य धर्म श्री
शाक्य मूनि न आ ज्ञा दत्तं ॥ यथा ॥ स्वयमूनि र्या सत्त्वानां नो कार्या क्रिय योजनं ॥ अति
या शक्ति ही नानां ओ काने या गरियसी ॥ आवरख गथे धे म धे मन संसार समुद्र यार
सामर्थ जव स या ना म सद न्या व ने पु मार ॥ धर्म धे धर्म नं यार यान्या व व न म फ व स या
त नाम यार या य माल ॥ इच्छा पो ल रु यो न्ना विज्ञान भा व न ॥ दश ये न्ना त जं तु नां र क्ष या वि वे
धं यूनः ॥ हरि न र कं तथा शु कं पा तं चान ल यं व र्म ॥ पंच मू न वि शु द्ध न पंच ज्ञा न प्र क ल्प ये त

मनु
२०

यश्चिद्गुरुयेतातितंयेवयोयचेत्॥ भिक्षुनेष्टनिकादेनांतत्वांसंगतिदृशिनं॥ ॥थ
इत्यनखमाचनस्वरूपः वराजितिभावनायाग्वहसिकसज्जुयातविधियुर्वकलध
रास्ययाव॥ ॥आधातुअमोघसिद्धितथागतः॥ हरीतवरा॥ तेजोधातुअमिता
भतथागतः॥ रक्तवरा॥ वातधातुवेरोचनतथागतः शुक्रवरा॥ ॥एधोधातुवत
संगतथागतः पीतवरा॥ आकासधातुअक्षोभेतथागतः॥ नीलवरा॥ ॥अन्या
गुलिधातुसुदुविकसि॥ वरावराभेदेनयंभूतयंज्ञानभावनायाय॥ ग्वहस्या
विदुस्वरूपजुलवगुलवगुलगतिसजीजलयानिष्टानकाजेशुयानिसंगतिदृशिनम
विधे॥ ॥सहारक्रमयोगनशुचिपुडेमयोजयेत्॥ अयाप्रोभेयेष्टमममयोग २०

विदुर्वाजितगातेषां दुर्गात संशोच्ये सुखावत्पानियो जयेत् ॥ ॥ ध्वनंति संभाराग्निहोमक
मयाय शुभं शुभं वाचा जुयाव-युम अभिषेक ह्युषसितसामंत्रक मयायेन तोलपु
सरीरथर्था नयानि सितसा दुर्गाति यरिस्व ध्वन सरल लदर्शनया चके ॥ सुखावति ध्वन
सहाय ॥ ॥ अरजा स्फुरजाः सत्वाख गाथा सध्वज नवः ॥ शो ध्वये दुर्गा तत घासम्बो चोत्था
ययत्सदा ॥ त्रिसमाधि समाश्नना नयायाम्बि ध्वयेत् ॥ ॥ ग्वाल संख सज्जया लपुप्रा
सिकरं ग्वाल थल सज्जाल ॥ ॥ आकास सचल लपा न जवद कोपनि सकल्य दुर्गाति तो
लना नये काव संधि ज्ञान सदु विवर्ध धाल सा त्रिसमाधि योगयाना वका ये वा कचि
न विधु धिया ये निमति नयं ज्ञान यवन स दुर्विधि ॥ ॥ सभाराग्नि समात्य

म०

२१

निर्वोदिति कदाहृभिः॥ नोरवरायि चरेणा. सहाया गंतुतोष येन॥ ततो निहरद्रामानिथे
वा॥ येन वनोपवा. कर्मदरुद वा चरोभिः सो ध्वयदुर्ज संया॥ नवको ध्यायसको वापिब्र
नयुत्तानयकाः॥ यिरददा नोदिंकं क्रियाः॥ प्रथम मृमि सस्कारं जर सस्कारं द्वितियकं॥
भुतियंकं॥ तेज सस्कार चतुर्थं प्रानवाहकन॥ सावद्वनं जयो वा वरुणीयारी निमृति॥ त
वत होमयुक्तं तथाः भूदसं संस्तमानसः॥ नका व्योष्यद्वनं मन्य सावत सेषा गित तज्जनं॥ ध
नंति सभा गिर होमया र्थे निंवासे आदिनं खा सुवरु का सनं होमया र्थेः समस्त हा कुयवा
र. ध्याते कर्म पुन का वासि क ज्ञाते धनयन॥ गासस पु ससंति धे सगुल ल सुशानस
जुससां लंख चाल ध्यावदु गीतिपरिस्थ धनयाय॥ उन्नयनि सेना सेनयायानि सेनंज

२१

जल. संस्कार्याये ॥ धर्मसंस्कार्याये ॥ विदुर्निर्वाये ॥ अग्निसंस्कार्याये. ज्वलत ध्वनं ज्वय.
वायुवृक्षाण्डतपनयज्याना वृमवतले होमकर्मयाये ॥ ॥ तस्यैवाग्निसुखं कार्य्यानि
भावस्वरूपितः ॥ समासमंचयौ त्रंच स्वस्ववर्णांशुषिषको ॥ मित्रं जामातृरिद्वारयेत ततोयं
प्रदापयेत् ॥ ॥ आवध्ययानिस्तथवरजाति या पुमाननं संखविये ॥ गुरुयात. स्वया
न. सिक्कयात्. पुता जलियात ॥ ॥ आन्दन जमनीवालाः यावद्वर्षचतुसृष्ये. न कत
वीदकायानीविरादे न सुचि भवेत् ॥ वृक्षानस्य विदु. दतना वध्यसवालका. एतना
वखचाये नुनसुः जलदाना वयमतेन ॥ ॥ पुत्रवेस यते बालं पितृमात्रे विरात्रकांस्त
नमात्रंच गोत्रा न स्येयवर्षा विमागतः ॥ ॥ नो च वृक्षसिधे. नाम वपुया स्व माये नुन

𠂇

31

॥ खचोने ग्वत्रया उषुनुवेन प्रोषया वर्धस्व या वविसे ख २ खर्न विमागयाये ॥ ॥
युवजितो यरयनं कृता ये मृचते सानि ॥ यिरादानो दकदिना का रयेत अस्तो सचयः ॥
वशे दु न ल सुद्रया स जु ल जीन क विरया स जु सा वा ह म रा या क्षा त्रि या वि ड य या सुद्र
या वा रत या स सित सा यिरादान न दा य ज न दा न या ये अस्तो का ये मा ल ॥ ॥ स प्रो
ये न य न यु मा दा द कृ त मृ त ॥ जल दान च क त्र याः यिरादान विव च्छयेत ॥ ॥ ध्रु
या र न ना य वी दान न या स व दे ह न या ज जी न मी व या स सित सा जल दान मा त्रि यिरा
दान या य न दः ॥ ॥ द्वादशे वर्षे सं पू र्ण स्त्रियते व मान वाः यिरादानो दक सर्व कारणे
द्वा वि चारतः ॥ ॥ ग्वो लो हि नं य ह वा जे माने द १ २ दया दो हा व व ध या जु ल सा यिराद

22

अथमाल॥ ॥ जलशतयापमाल॥ वनेर्द्धानिकासद्यसे (य्यवजाचार्यतथैवचएकधिराप्रदातव्यांस
प्राहानिविसेयतः॥ ॥ निर्वर्णनादिश्चालाकस्रवजाचार्यपरलाकस्रथथीस्रसितसाथनिशिं
यथयद्धलमात्रजकस्वरूपस्यामुमालविकलमालविशेषनंरुसन्दुनुमामाल॥ ॥ नृ
तिये अहनि संप्रापेकतर्थासंचय. ममस्रसांतंयनकत्वाशेषभइमानिहयेत्॥ ॥ ग्वर्ण
युरुषसितसाखमूयुन अस्ति सिलेयुजायायनस्त्रीयुजायाये लोको भस्मगंगा सचयुके
तृतीयदिवससारत्ययचसकयथाक्रमं॥ इदुर्गस्वधनार्थचभरालं वन्नयेत्कृतं नयायति
स्थाययेदस्ति चेत्यगमे विदोयतः॥ अमिताहुवसुत्रचपाठयेत्पुनः पुनः सप्राहो नितुसं

मऊ

२३

प्रयोज्यकर्मनिकारयेत् ॥ स्नानक्षौरतथावस्त्रंभोजं संधं प्रवर्तयेत् ॥ ततः पश्चात्पुदातव्यां वो
ध्यर्थे पिरासिककं ॥ स्नानक्षौरतथावस्त्रंभोजं संधं प्रवर्तयेत् ॥ ॥ स्वकुपुगुन्यानुषुगुदुर्गतिविहारि
संरासपूजायाये अस्थितादनादिपूजा अपरमित्तया यकुरसकुकुः दूखवेनके लुसियापमोदलु
यतिगुवर्तित्यपिरादातयायेसंधंभोजंआदिसम्यक्कृत्वा विज्ञानलाय अर्थेनदूखवेनके लुसियापमोदलु
तथास्वभावाक्याकेनलीनयायपीदयाय ॥ ॥ ॐ मने २ महा मने स्वहा ॥ ॐ नमः सर्वदुर्गतिविहारि
स्वधनराजायतथागतायाऽहंतेसम्यक्कं उवाच ॥ तयथा ॥ ॐ शोचने २ विज्ञोचने २ सर्वयायवि
ज्ञोचने शुद्धे विशुद्धे सर्वकर्मवर्तानिविसे ॥ ॐ स्वाहा ॥ अथप्रमृतिहे अमुकमिक्षोयुथागता
या २ उन्नतायां समानां बोधोतथा हं परिणामहं ॥ ॥ ॐ मने कर्मि

२३

क्षुतां एष काश्चिद्विचरते ॥ चैलकोपाशकाताच्चयथकर्म्मयथर्काया ॥ ॥ आसनेकभि
क्षुचैलककआदिवागल २ कर्म्मवागल २ क्रिया ॥ ५ ॥ पिरादानयायशुचिचित्रयाग
येगुलिजातउध्यंनकनुवक्कुरुनखंरुसङ्गतेपिराककर्म्मयाय ॥ ६ ॥ पिरादाननादक
शौच्यनुवर्णक्रियाशोभनः पुध्मादेवसमारम्भः यावत्तर्प्रादेनेषूच ॥ ७ ॥ पिरादानयथाका
र्यः सुखात्ताचजितेद्वियं ॥ पथमहितीयरुतियययकंचपुदाययेत् ॥ भसदसपुबिडो
व्येथसर्वदुर्जातवेदनं ॥ वाच्यांगसप्रचरुचजायेतेयंचमेहनि ॥ यष्टमेकतथापिरा
सप्रमेक्षयपिराक ॥ कयाउनगिदुषून्मुखदुउनदुग्बर २ पिराथयथथेयेदुङ्गद
स्वगव २ ययसप्रमृजिनयागतविशुद्धियायनिमित्तिनइर्जतिवनेमृतालेकेयाज

मनु

२४

र्थनसप्रधातुसंडत्यतिजुवभालयेसुनूककृद्व्यऽधिरायायकसकृषुनूनेग्वदथय॥
सत्वरजस्तमधस्मान्यन्यकायप्रशोदयेत्॥ स एवाक्रौयुनश्च कं वी विवी जा पृतं शुभं॥
परिनामनश्च यत्पिया नैयसिनं सन्निधौ॥ ॥ सत्वरजुनरजो गुनतामो गुनः ध्यात्रिगुणा
जुयू अर्थनं. चर्मलाय अर्थनं. पूराय स्मरिलजु अर्थन ध्यायेरा कर्म या इतथा गतया
गुभाग सीयेरा चो येके॥ सप्रत या गते लोनलोयिरा प्रदाययेत्॥ पुनः सहाति सवेन गावे
जाहादिक भवेत्॥ ॥ सप्रतथा गतया के लोन का व पुन जर्म ममालके निमिन्निन गो
या सपूजायाय विधानर्धे॥ ॥ अथ वामं च्च कीजेन स छिन्यायेन विनयेत्॥ अशावाका
सिकत्वा द पुनयिरा श्रुदस॥ यिना पूर्वम्बनः पंचविकलेन सदेवच॥ प्रलानकारसम्

२४

कृपितं मातरि यथा ॥ ॥ मंत्रया विजया रु धं सृष्टि या क धं सृष्टि या य क सृष्टि या य धे
धं मसि लसा थ धं मफ तसा च नु द सयि रा ध य पि रा नु लोक य ध त या य न क ल द ल
जिम दुग् न त्र मा म य धं जु ल सा लो न या ये मा ल क थ नं ॥ ॥ पिता पिता महा दे ना
माता माता मा ह य था असा पिता अ य धा ग ते ति गा थ या य थ न् ॥ लो नं च यो ज ये त् ॥
अजा व न् मा म अ व न् थ व मा म धृ ते या न् ॥ य था मे न् धा ग ता या ह् ॥ थ ते वा के य द ल
पा व लो न या य ॥ ॥ द स यि रा मि य् क प्र त च स र्वा के ॥ ए क धि क द स ध्वे न ध
त्रि यं सा रा धि म वे त् ॥ वि श्वा नां द द सा हे न हे न दि ने क वि स ति स ड के ॥ म त क स त क वा
पि रो च मे त दि धी ये त् ॥ व नु र्वा जा ति या द द पि रा ध्व कं ल हा से त ल ये त पि रा न स हि तं

मंजु
२५

जिम हू न सुविजुयिद क्षय नाति या किम निह वैश्य जाति या नित्य हू न सुदयातियां अथ
थ व २ जाति या पितर्यां थ थेषु विद्याये ॥ बाल न या जे हू क्षत्रिया किम हू वैश्य जाति
या जिम निहू सुदयाति य हू थ थै न सुविजुयुव ॥ ॥ देशां नरे सुति पि राडे विरस्ये न
शुचि भवेत ॥ यज्ञ विवाहे धर्म च सेत क्षरा हू वि ॥ देशांतर ससि कस्त या स्य चाये
हुनं सुचि हे नं जज्ञ कर्म या ना वे रे स धर्म दान या ना वे त स विवा हा र कर्म स संन्या
स या भेद को ले थ थं मुले सिक सा त कारणां शुचि ॥ शुचि ॥ मंजु श्री भगरंत मेत द्वा
चेत ॥ ॥ जीवन श्रयिता यस्य मृ जने च ना दि श्रतः ॥ स लो न कर ने त स्य आ कि ल
य केतः ॥ पर मे र मंजु श्री नेशा क्य मुनि स्के इ ना य या त हे र न स्व ग्व ह्य या

२५

बहुमानं चोरिकापरिधीन ध्वस्तया तत्राद्यायाय लीनया गथे वक्तुं इनायया तमः ॥ ॥
भगवानाह ॥ यिना २ मरुत्तं वयं वेतामह सस्य च ॥ बुधधर्मे न्वसंदध सखनतस्येव सौग
ति ॥ अनेन विवेना ज्ञेयोः सध्वया लीनकर्मसु ॥ ॥ धन श्रीशास्त्रमुनिसुतथागतस्ये
न आज्ञादयकलं ॥ स्वस्वयां ववुयां ववु आज्ञाचार्य ॥ प्रयिता ध्याय अजायां ववुक धनं ववुध्व
मसंघध्वकं ध्वयनिरुक्ते सरसा ध्वकं ध्वगुलिक धनं सिया वरय कल्युगतिवियलीनया
य ॥ अथ सायकशा द्विपिरा ॥ ॥ लीनपिराया खनि जाय पुनी आव आद्ययिक
या खजाय ॥ ॥ लीननिर्तरससारत्यनो मे निरुक्ते गृहेति ध्वे देवा लये सध्व आद्ययिरा
प्रसस्यते ॥ ॥ नित्य आध्ववाय क्रिथ कथनं ध्वय गुलिनिमिन्नक ध्वयः कार्यका

मनु

२६

रनदलेहनंयवर्ष २ काले आमावासिसुक्रान्तिपुनिसिद्धादसिध्वतेयवर्षस्राद्धयाये. ह
नंतिथि। लेनावसि क गुदिनसति धुसव्रयवदेवयाथानसथाधिं गुधानसस्राद्धयाये
यसिद्धविनफललाउ॥ ॥ भक्षभोज्यादिकसर्वद्रव्यजुस्तितवर्जितं॥ संपुराणिमभु
द्रव्यापयेत्ससाहितः॥ ॥ ग्वत्तुपुह्वन्नस्राद्धयायस. भक्षभोज्यादिभिनकर्व
तयावमभिनयदार्थे तालतावहृदयेनानिमलयानावसुद्धमसि सजाजलय॥ ॥ यु
वभोजनातन्त्र आर्यादिनिमंत्रयेत्सयंयादोयश्चादावम्यशयेत्॥ ॥ जजमाननह
युपुपुपुंराहितयानये पुनकावनिमन्त्रनायायेनयनलारनिमन्त्रनायातवलराती
थेनयमन्त्रवथथमनुतिरयनासियरागुथासिचसुपिसिलयाय॥ स्थापयत्वा

२६

लघुगुरु मन्त्रासु विस्थानेन वा विस्तरेत सिद्धिदाया च मन्त्रत्वाद्वा भूमौ नैव ज्ञेयम् ॥
इति वयं विवर्तयामि स शुद्धकर्मसाय यथा धिगु थां य स भौके या यद्वा च या य आदरपूर्व
केन फलं न फलार्थे ज्ञातुं कर्तुं जन्मयेयि नु लोकयातया या च मनसा दविध्य ॥ ॥
यदा या या च मन्त्राने मन्त्रमुच्यते गुरुः ॥ निष्कलं सर्वकर्म निमग्नं ब्रह्मस आदर
स्वसुमुखं नृपति सिद्धिदाया य स नृपतिना धानस लाह सिद्धिना थाय आदरकर्मसाय नसा
यस्य गुरु न मन्त्र क्रियातयात गुरु न यात वलिक कर्म निष्कलं जय या जेव्यर्थे ॥ धर
नकायि ॥ ॥ संयुक्तो सुदुःखो जन्तुर्निमो न युवती ॥ निरासतो न सुसंयुक्त क्रिया
वान् शुचि धर्मा ॥ यथा स गुरु न कर्मसाय के माहा नालिक शुद्धात्मा मन्त्रालक नो न म

मनु

२७

आकल ॥ इन्द्रियजलयेकमेवयावस्तुकसंरोभमदुचिभायनंसंतोखक्रियावन्तमहावि
वक्षन-धत्तमानन्तशुद्धिधियुक्तश्राद्धकर्मसंगुह्याय ॥ ॥ सखवगुहश्राद्धैव
स्थाययेच्चसमाहितः ॥ भवेद्धृष्टश्रयतश्राद्धेमाक्षयंयित्तरीगतः ॥ ॥ आधेनगुरुश्रा
द्धकर्मसथादनयाय-सक-नयिभ-लोकसंतोषजुयावस्वजलोकसवास्याय ॥
दुष्टात्मावर्धिरक्तवदसिकलहापुजः ॥ असन्नुष्टाशुविभूष्टसयिवगुरुवज्जये
न ॥ ॥ इष्टमावरनत्वाययव-अया १२ नयफ-काबलाकचारसंतोषमजुव-व
पिस्तुष्टोरोरनेममाल ॥ ॥ निरासायतरोयाभि-दातोरोनरकेवजेत ॥ आयसंमन्त्रयदा
रुः श्राद्धयात्रचवज्जयेत ॥ ॥ पथिस्तु आचार्यनश्राद्धयातकल-मायिभूलाकोनरासा

२७

न्यावद्वर्गं जगमान्न नरकवनिवृथ्यपिराऽथययात्तथरएगाथलमंनव. एनज्जाभाथल
सत्यवृथतेतोत्ततेमाल॥ ॥ पुमादादोयतेयद्र. दत्ताकिविषः नवेन॥ धर्मचातुपु
रहृत्तयरावागास. संतोवेतवृज्वादि यस्तुलिगव. पुत्रये वकुसः वृधः॥ अथासुमिबु
नृश्चैववरागि. धर्मवृज्जयित॥ माहिकामातलिषुष्यदृष्टानुच्येतिदेवताधनया
निधित्तोरुष्टाविकला अतयेवव॥ ॥ मतेवधाकोयेदाथकितलमयाखरुं नर्म
क्रियायोनस्तसमस्तधपनमृन्याववनिव॥ धर्मचातुक्रययान्याव. गव्यासमतसहि
तयान्याज. पुत्रायायविद्वक्षनक्तनगंधे अस्तुविचुतयान्या अथेतोयुपकारनय
आयाय. जगतास्मान्नमत्यवपिबुलोकनिरासायान्याववनिवदेवलोकाजुकोसंतोष

मनु

२८

बुधवृत्तः पितृलोकां कुरुकोपाधिकस्तुसाहेतनसन्नापबुधवृत्तः पितृनस्वाकस्वानमतेवा॥
नकोर्यागच्छपूष्यानिप्रश्नात्सर्वानिदाययेत्॥ निलवलि कशायुष्यमन्त्रकुकेमहा
दतः॥ सयवश्राद्धे मन्त्रकुरुयुक्तिपितृरोक्षदो॥ सर्वभावेकशोशोषं कशाभावेचथा
कि॥ सर्वकार्येकशोशोषं यद्राद्धे विशेषनः॥ ॥ ध्वनेनिमित्तिनः नस्वाकस्वान
मनेव दकंसमस्तु नत्वालिथ्य जुकोसमस्तनेव दानः लभः कशः खानः मय
नः जुकयान्नात्रगुरुसकल्याविषयथयेयात्सायेद्रोकरुंतोषजुष्टुः सप्तसंकर्म
किथासकशोशोष॥ कशमदयकं यात्सायाकोकमन्त्रार्थ॥ विशोषनः सप्तकर्मस
श्राद्धकर्मसप्तसिद्धिः॥ ॥ नदिर्चनायि होनचंगमर्तहोनचकारयत्॥ द्वादसांशुल

२८

यमानचग्राहयेछुमममयु॥ शाश्वतंचकृशायेचकृशचतथा। मतं॥ कसमलंत
थाक्षीत्यवःमद्रसंवरनेकृश॥ ॥ ध्यनेनिमित्तिनकसकायकाविनतोहाकम
तेववाचिनममनववाभमगहोनमनवजिनानिअंगु। नियुमानकायामिगुथायका
यावहनीकसयाचाशंबअसलभालये॥ कसयानअमित्तमवभालयेकृश
याहासअक्षीत्यभालमावदंवरदेवनायामग्रेनकसकाय॥ नैवीनिकचामिगुनं
थामनेचैरकचवलकं॥ दुलभगस्याअमतातिदत्ताय्येधयतावजेत॥ एतायमाप्य
यात्राणिआहुकनिमित्तये॥ सगात्रावाध्ववादानांअभावेपुत्रमालक॥ पुत्रास्य
पुत्रजानश्चावेदेशावेष्टवयादि॥ अत्राभावेचयेग्रंथदाभाय्योरजस्वरा॥ ॥ नि

न ७

२५

शिरिकाभिश्चुयानडाप ॥ मतेरकभिश्चुयानिसचैल कभीश्चुयानिस. महाइवम. धाय
 गुलीपिरादानया नागुलियायायायून्यनखग्नैलोकस. वाविनसजोत्रनसाहन ग
 न्यावपत्रनडसाथमया न्यायून्य. स्वजैवास. हन्विप्रदेशश. योन्वावलसहसयून्य
 तजुवविदेशसउपदुजुयुवथवेलससनामोत्रेनंगाकक्षुवि ॥ ॥ विज्ञोतचोद
 नेयेनश्राद्धमंगकृतं यदि निरासापितरोजातिकूलदेहतुजायते ॥ श्राद्धनिरामृत्यु
 व्रंभृतं चरजसिश्चुतकेतल्यातेचनिरासकादातवाधियामिहति ॥ ॥ ग्वप्रयूरुवनपि
 रादानकर्मयायदिनमसिलन्यावश्राद्धकर्ममंगजु. थयचजुलनगवयि. लोकाकन
 आयविद्युव ॥ भातवनेमा. चकं चायव. हनंयिराथयावलसरजस्वराजुयुवथयेजु

२५

लसां जुलसां निरलासा जुया वरिहा वनिव ॥ कार्तिके शुक्रमासः पूरणि कादिनं मयुतिं
धर्मयिराऽयु कर्त्तव्याश्चतुर्वर्जकलाफये ॥ कार्तिके माघसे माघे श्रावने युगनिर्गमे
कार्तिके पूरणि मास्या सुभतीयामाभवेक्षिते ॥ पूरणि मास्यां तथा माघे तथा श्रावणे शुक्ल
त्रयोदशि ॥ येन तत्र कृतयिराऽअयमेयफलमेवेत् ॥ ॥ ग्वद्रूपरुचन-थचतुसा
ससग्वल २ स्यंघिराऽथयिवरुणे-थद्रुया अयमेयफललाय ॥ गथ्ये चासा कार्तिकया
युक्तिरिह दिदिनवकीलाया भूतिया कूक सिलाया प्रुक्तिगुलागा कत्रयोदसिकूक-थ
नेये घानस्ययिरादान ग्वद्रु २ यान वद्रुया वद्रुया चतुर्वर्जकललाय चतुर्वर्जकलचा
ये-धर्म-अर्थ-काम-मोक्षे-थने लायुव ॥ ॥ आदी प्रक्षालयेत्यादीयश्चात आ

मउ

३०

वसनयोः भूतां ॥ गतो घटं गन्यासं च नैराह्मा भावयेदुती ॥ इवाकुरु कं संतीयं राधाक्षसम
चितं ॥ पूर्वमिमुखो भूत्वा च अर्घ्यं शुभ्याय दाययेत् ॥ दक्षिणामिमुखो भूत्वा प्रमुखं
चतुरंतथो ॥ आय्यासं घातारस्य च स्थापयेत् शुद्ध भूमिम् ॥ पायद्या च मनो धेयं न भो
ज्यं संकल्पनादिकं ॥ गुरवे आय्यासं च यजयेद् दक्षिणानसः ॥ अयाये च सो न च त्र्य
येत पीडा नि योजो जयेत् ॥ संलीनूक शो श्राद्धं धर्मं धातु प्रयुजयेत् ॥ यिराउ दामे
श्यसय उत्सृजेत् न व पुनयेत् ॥ उत्ताने सदा च मे सदा गुनी मिश्रो चने ॥ ॥ धनज
जमान याया क्रयां थ उा तिसि य. नो सिये यद् न्यास आयाय आत्मा शुद्ध याय ॥ धनं
लि. दाय फल स्वानन लब्धि. कूस लंख. ताय. अकृत. ध्यते शेन. ध्यते संयुक्त याना

३०

विसर्ज्जनयायजमानयात आँ॥ ननं॥ यश्चिन्मस्वयः हाथजो ययकंतयावविशर्जनगाथा
परपरि॥ ॥ॐ हुतोवसत्सुत्वाथसिधिरिंदत्वाजथानुगागच्छुच्चबुद्धविषये पुनरायगम
नायच॥ ॥थया अर्थे॥ समसं सत्वया अर्थसिद्धिफलवियावंगथेवाच्छाजुरो
अथेफलवियावः गथेवाच्छाजुरो अथेफलवियावल्लिहाविज्या हुने चकू पुनवीरलिहावि
आयमाल॥ ॥प्रेतालयेतिथेतदागरसिद्धिप्रयिधुप्रवाहयनित्यंप्रेतशार्द्धेचनित्यस॥
पिराप्तेष्वं च अनन्तवाचवैः सह भोजयेत्॥ ॥थनपिराप्तेष्वं के दनसायेतसित्तासत
तत्र चन्ययूष्लीसः स्वसिसतिथिसयेतश्राद्धयायनिसारथथे॥ ॥थनपिराप्तेष्वं
उवयग्वाल आदियसमसंवत्सूजनयनिसेनभक्षयाय॥ ॥महादेवाथवानकेदि

मंजु
३२

नानेषहृदय ॥ स एव कालपिराऽस्मिन्साकालं तु वञ्जयेत् ॥ ॥ पिराऽथ यथावेष्टेथथो असौ
निकर्वाङ्गिरिजुलसाऽनिभालकेयफ्लाक्रियाखेपहरंसश्चाचकर्मसाय-रात्रिसज्जकोमनेव
इतिपिरादानविधि प्रमादात्सप्तचाताच आत्माघाताचमृत्यवः कृष्णेपक्षेचतुर्दश्याने
षापिराऽपुदापये ॥ ॥ हन्वज्वलितिनपूषथमथथम आत्माघाटकजुयाव्रसिपुः
थमथथमनसहसुपहाऽजुयाव्रसिपुः-थथीऽजुयातजुलदं कृष्णपक्षेचतुर्दशिके
कूपिराऽथय-थासज्जकगनजुलसांतेव-तिथ्यतेव-देसनेव ॥ ॥ शुचिवृक्षदसाहेतदा
दशाहेतक्षत्रियः ॥ वैश्यापञ्चदिशाहेतशुद्धमासेनसुद्यति ॥ ॥ ब्राह्मनयाजिकृ० तं
शुचिक्षत्रियाजिमनि० १२ नशुचि वैश्ययाजिमन्या० १५ नशुचि-लुदयारदि३०